

गोपनीय

५९६/५९६३ (१०३)



५२२८७६ - २४
५१०

१८" x १८"

२५ + अंदू

गोपनीय, इक मोडे वडा

तुळशी मुक्तेश्वर चतुर्थांश्चतुर्थ

काश्वारी वडा प्रदान देशीरोप

भाग मंडळ

कल्पना संस्कृति

ज्ञान प्रवर्तन विद्यालय

मंडळ

काश्वारी विद्यालय

मंडळ

प्रगोपणित ॥

॥ वं दुनिमां स कुतपां दुकासी ॥ प्रणाम्य हरें मग सज्जना सी ॥ श्री छछ
 ॥ नामेनि गाउल केन्ति ॥ गोविंद दामो धरमा धरेति ॥ ॥ ब्रह्मानि काळिं त्य
 ॥ णनि येद्वादे ॥ गोलिमि सिरे उठिबासु दृष्ट्वा निजबोधु पश्चित्वयचि
 ॥ नीरनाति ॥ ३॥ विनमात्रमात्रमात्रमात्रमात्रमात्रमात्रमात्रमात्रमात्रमात्र
 ॥ सत्रमयोगें दृष्टिविनाति ॥ गोविंद ॥ ४॥ ब्रह्मावस्थितिउठिबासु कुद्वा ॥ विनमा
 ॥ त्रगोपाकरीतानि धंदा ॥ ध्यानिमनिजे श्रीहृष्टमुमुक्षि ॥ गोविंद ॥ ५॥
 ॥ वस्त्रणोदृद्वादुहननिगार्द ॥ रस्तित्यासि श्रीहृष्टमुक्षिपाहि ॥ गोगोर
 ॥ साचिद्विम ॥ दृतानि ॥ धुगोवि ॥ ब्रह्मानकाळिं जनवीयद्वादा ॥ उठिल्य
 ॥ गोसत्वरबासु कुद्वा ॥ गोपाच्छवारेन्मुजबोद्वातानिगोवि ॥ ६॥ गोधनावै
 ॥ लुनिगोपद्वारा ॥ पात्रावैरावजिं ॥ तेष्ठरेमजुक्षउटा ॥ नानि ॥ ७॥
 ॥ गोविंद ॥ ०॥ सूर्योदृहीनुदनि
 ॥ छं दृत्यापादवगुणगाति
 ॥ शोदिनमे सुदरगोपद्वारा ॥
 ॥ बैसानिजां न्यासु उठिलिगो
 ॥ सारे हर्त्तिं हु ॥ नामगान
 ॥ नें ॥ गोपाच्छवारावैरावजिं ॥
 तिलउड्डनीरमुमिठ्ड्डी ॥
 तरीं चालुनिसाँज दोरा ॥
 रिनामगानि ॥ गोविंद ॥ ९॥
 उजिदुर्मुख्यकल्पाने ॥
 १०॥ उलवर्वेष्ठ उलुतहुल
 उलिकंचभरागगार्दनि ॥ ११॥
 पाणित्यपाणीधौर्णगोपं जायो ॥ अंगामयमुवेष्ठनि लिङ्गज्ञाया ॥ मायो तु
 रेद्वादवगुणगानि ॥ १२॥ प्रकाशकेतुमगत्यारविने ॥ गोपादधितेष्ठुरव्वी
 रवीने त्याकं केणावेरवकारहेति ॥ गोविंद ॥ १३॥ गोपाव्वतेगोपनकानना
 नेते ॥ देउनजाताकीरकामनाते ॥ हम्मचुनानंतश्रीहृष्टमुमुक्षि ॥ १४॥ गोविंद ॥ ०॥
 तारं त्वे नें सदव्यावनाते ॥ मायो निमिधुष्ठिनेजनाते ॥ गोपाव्वसैर्दुज
 ॥ लगी एमासु गोविंद ॥ १५॥ गाइवनावांचुनिदिनजाहाल्या ॥ गृहिनसेरहृ
 ॥ षत्यासुकला ॥ दाविनवितो ॥ उनिधुमधेतिगोविंद ॥ १६॥ पाकीन्यामास
 ॥ निगोविंदवाल्लि ॥ लाटिनसे सूदरपूर्णपोचि ॥ घोषाणवेंकं केणवोपरेतिगोवि
 ॥ १७॥ वृद्धावनावासु निजायवाला ॥ उसीरमास्याद्वल्लासिजाला ॥ गोपांगर
 ॥ त्यामजलाजीवति ॥ १८॥ लोविंद ॥ सूष्ठुउठिं सत्वरभोजनालै ॥ भानुप्र
 ॥ हरयेकजाहाला ॥ जेउनियामोपदरासपेतिगोविंद ॥ १९॥ ब्रह्मालुनिर्द
 ॥ तापरेति ॥ दोणिपसेसुदरतुडासाट ॥ भालीकसीहेतुजसोपण
 ॥ हरिहुरेदेउनियनिधाला ॥ मेलांत्वे मेल्लानिमिवाला ॥ म
 ॥ जाहुमुक्षि ॥ गोविंद ॥ २०॥ तेमुनियां सूष्ठुरमेत्तुरे ॥ त्याए
 ॥ मिकाले ॥ वाद्यान्तरेसूदरगीतगाति ॥ गोविंद ॥ २१॥ कार्यमे
 ॥ पावेबहुतो जित्रभक्षया ॥ जेघोगुहिउदेउनिरुतविति ॥
 ॥ गोविंदगो ॥

२७

जातुनियोसुंदररानतेष्ठेणागाइसन्नाराबृहृदुधजेष्ठेण॥३॥
 निग्रासपेत्तिगोविंद॥२४॥त्यानेतेरेष्ठुनियास्मिहरि॥ने
 आसेमुरारी॥घेस्त्रभियोष्ट्रिष्टिताटहाति॥गोविंद॥२५॥न
 ॥जनयादेरेसि॥रेवेलावयाष्ठोचवेत्वेरेसि॥तोबुरष्ट्रिनायक
 ॥गोविंद॥२६॥विंदावनिसुंदरवृक्षपाते॥श्रीहृष्टुनामेष्ठनिग
 ॥पश्चिकुक्तेष्ठाद्वगुणगतिगोविंद०२७॥चेतुफृच्छागीष्ट्रामक
 ॥उल्हासनितिंबृहथोरजाहारा॥परंतुमाधवनामगति॥गोविंद॥२८
 ॥गोपांगनोलुच्छहरिस्त्रैस्या॥जैर्यजिष्ठपद्माणिष्ट्रगनव्या॥दंव
 ॥शगविंदिष्ठवितिभाणिगतिगोविंद०२९॥प्रपञ्चधंदाकरितिग्रिक
 ॥नारी॥परंतुत्याचिस्त्रितिपुननारी॥निदिस्त्रिवावाप्रतिगीतगाति॥ग
 ॥विंद०३०॥गोकुदिष्ठ्यात्यानरभाणीनारी॥धातिसदांत्यामपुकैटभा
 ॥री॥प्यावषेलरिच्छणनामगति॥गोविंद॥३१॥श्रीलक्ष्मिकासनि
 ॥प्रादिष्ठर्ति॥त्वरणितिरिच्छासि
 ॥गोविंद०३२॥दास्त्रारेष्ठ
 लक्ष्मितिगोविंद०३३॥
 रेयाद्वदेष्ठेष्ठजा॥ध्यावद
 नवणिष्ठेष्ठचरित्रवाणी
 करित्रिष्ठवृक्षराजगति॥गोविं
 ३४॥
 ३५॥

॥वरभहरिकुलेष्ठि॥दे
 ॥जेकांजलिंनक्तधीरं
 ॥यावाकरिष्ठेष्ठकिर्ति॥
 ॥तेरेवेष्ठतिवैदेष्ठमहाप
 ॥दासोधरमापवेत्तिगुण॥
 ॥मत्रिकरामाचिकराविवंसाविष्ठुद्गवा॥तनमनमाणि॒धनसर्वलक्षिकसाउ
 ॥१॥पांचपंचकाचामारसर्वकाळेष्ठ्याहर्॥रामिरामदास्त्रणेसर्वभक्तिचेनि
 ॥गुणेण॥३॥७॥रामप्रजनाथावानाथाअत्प्राकेवारीसमर्थ॥वीनीशिष्ठामुक्त
 ॥केलि॥गणिकाविमानिदेवसविलि॥रामीदनाचादयाढ॥देवसेष्ठविष्ठेसकल
 ॥रामिरामदास्त्रणेण॥वातांमात्प्राकायउणेण॥५॥७॥देवप्रसतंपरिरास
 ॥त्रेताक्याचाकोणलेखा॥मनाउद्योगवाटति॥मानार्दीताउङ्गवति॥१॥
 ॥स्त्रस्त्रवाटेनामंतरी॥नानोवेधनाकरी॥१॥रामिरामहस्त्रणेमावें
 ॥प्रजनदेवाचेंकरावें॥३॥८॥प्रकालार्दीपवेनेटे
 ॥मावालाचवडा॥त्यासिष्ठमिष्ठनलाघु॥१॥१॥मपलामत्तर्जेउणें
 ॥देवसाहेनाकरीटण॥दास्त्रणेनानापरी॥देवमत्त्राथकेवरीष्ठि॥३॥१
 ॥सोउिसंसाराचियास॥धीरभक्तिचहयासप्ता॒दुरक्षुक्तहालंसार॥
 ॥तयामध्येष्ठक्तिमरा॥ग्रंथपाठतीलष्टकेष्ठी॥जेष्ठेतेष्ठक्तिप्रोटी॥जमा
 ॥मालियाचेंफल॥दास्त्रणेहेसफल॥४॥

(3)

श्रीगणेशायनमः तु छसितो हुनयेत् ॥

॥१॥ रवौ स्त्रो मम भृगु श्राद्धे पोत धृति युगा । दिष्टु ॥ मन्त्रां तेऽषु च संक्रां
 ॥ तद्वादश्यां पर्वणि देये ॥ षष्ठ्याण्ह मिच्चतुर्द्वयां श्रवणे चापरां श्ल
 ॥ क्रा ॥ तु ब्रह्मिये विच्चिन्वति द्यु दितं ति हरि छिरः ॥ १ ॥ ७ ॥ ७ ॥
 ॥ तु ब्रह्मितो डाव घ चिक्रार्थना ॥

॥ तुच्छश्चिविष्णुतपेण ॥ द्विष्ठृपेण मंजरि ॥ प्रार्थी नोदेव कार्ये प्रभ
 ॥ दोषोनविघ्ने ॥ १ ॥ ४ ॥ तुच्छश्चिविष्णुना ॥ ध्याये अवतुच्छश्चिवे
 ॥ विं ॥ शम्भासां कमल लोचनो ॥ ब्रह्मन्नां पद्मक ध्वार वराभयच्छुभुजां
 ॥ श्री ॥ पद्मारामदीनाम्भाकैवरी ॥ दौकाम्भाड्यंगीकारी ॥ अंगीकारी लेवाभरा ॥
 ॥ त्यान्वित्यान्विजाति ॥ ५ ॥ त्येष्विजाधामात्मजे केद्वेजेवि ॥ मिद्दणा ॥ ३ ॥



छम्मू अद्युम्मान् - श्री ताम्बता मंडल

गिरणोशायन॥ वैद्यक्यं य॥ मज्या द्वन्द्वे श्री ताम्बता मंडल ॥

॥ पारितु क्ल सिए क्ल रक्षा ॥

उक्त बब्ल नेतुं बब्ल रवस्तु बब्ल परि गान्धे च लब्ल करतां तु
क्ल णा द्विउ दं डक्कि तिनी यं परि

॥ कम क्लास न हुरहुं को मक्की
॥ नास्त जनि साधक गोविक्क
॥ जय हे विजय हे विज
॥ प्रोरं पच्छमी ॥ १ ॥ मुक्कमी विव
॥ तैरंगो छमी ॥ तु क्ल सी श्री व.

॥ परितो तथे रोपापा ॥ ना
गे टेबापा श्री तु क्ल सी दक्का ॥
॥ हृष्ण मो स्थाने नि फक्त भारे फ
क्ल भावी ॥ तु क्ल सी नि र्थनि रि
ले मं छिम प्राचा ॥ याच संगे

सद्विचरे वन मावी ॥ जय हे विज
॥ त्युनि हुसै पाल्लोपार्जुनों लगड्हुटभावो ॥ वृद्धावने दरं वास्तासि
॥ द्यावो ॥ तुमज्या लंगो मेटे वेकुटरावो ॥ जय हे ॥ ३ ॥ तु क्ल सी पंजि रि
॥ पावज्ञान्याधारा ॥ पापचे पर्वत जीति न तुधारा ॥ पक्कनि येम
॥ किकर न्यणनि रविकुमरा ॥ न्यणनि भुन छवासी ना इसै भग
पश्चारा ॥ ४ ॥ जय ॥ तु क्ल सी मुनेवेवा सी मन हे वृद्धावनि हारि तु
सुन्नपाइ ॥ अपि ने प्रावत्तान भव संकटना ही ॥

॥ भात्ता वृद्धावने निज नित्यपाहि ॥ अनुकूल सारविच्छं दिव्वच
हि ॥ ५ ॥ जय ॥

श्रीरामसमर्था। परं ब्रह्मलं चिदानन्दं निराज्ञासंनिरेजननित्यकाल
त्रयाबाध्य सद्गुरुषणमाभ्यहं ॥१॥ ॥४॥१०॥ ॥५॥०१॥ ॥६॥

॥ठतमपुरमपर
॥मात्माजसिखसु

॥ हें ब्रह्मनि गुण सर्वस्वराचेन निज स्वरूप जाण ॥ मुक्तमाये सिभीधि
॥ द्योन पूर्ण चैतन्य जें ॥ १॥ माया ब्रह्म चौ विवर्ति ॥ ऐसा बोलि जे रे
॥ दांत मीड़ा त ॥ जो उपनिषद्याचामधितार्थ ॥ ब्रह्माण सिद्ध ॥ २॥ ब्रह्म
॥ निर्वाका रजै सें तै सें ॥ तें दवल सत्तचिभ से ॥ तेघें बन्यथा सास आ
॥ मासें तो ब्रह्म चौ विवर्ति ॥ तो निनाकारं न विकरत ॥ स्वर्य जै सा निज
॥ प्रकाशें वर्तत ॥ तेथें ज
॥ साहारा ॥ तेथे चान ऐ
॥ पंजै सा ॥ पंजै सा अ
॥ त ॥ अनुवाद सार ब्यार
॥ समता ॥ ई स्वराचित उन्म
॥ बोलि जे महामाया ॥
॥ सखत पाचें अनुसंधान ॥ परमात्म ॥ ३॥ मी ब्रह्म ये णो अकारे ॥
॥ जें ज्ञान सख्पै स्फुरि स्फुरे ॥ तेवेळ रवावेखतुरे ॥ महामाया ॥ ४॥ ब्रह्म
॥ जेवेढं परिपूर्ण ॥ तेवेढं तदा कोरं स्फुरण ॥ तिये माये सिमय दिक्षेण ॥
॥ करिछ बोर ॥ ५॥ केवव्वान विकार निःशब्द गुणिं ॥ निराकार निविक
॥ ल्पनिराभास ॥ सर्वें उपाधि विनिमुक्त ॥ सत्यज्ञानानंदाद्वय ॥ पूर्ण
॥ चैतन्य जें परब्रह्म ॥ त्यापरब्रह्म िन सत्तां चिमीं परब्रह्म व ॥ ऐसी उपज
॥ डीज स्वरूपो नमुख वस्फुरि ॥ तेशुद्ध सत्तात्मक महामाया ॥ तिंभापक
॥ अधिष्ठान ॥ पूर्ण चैतन्य जें परब्रह्म ॥ त्यानामपरमपुरुषपरमात्मा ॥
॥ ऐसीं हें प्रहृति पुरुषे ॥ हेप्रहृति हृष्यवेद्य साभास ॥ पुरुष द्वेष्वेद
॥ कनिराभास ॥ ऐसी हेशुद्ध सत्तात्मक महामाया ॥ चिह्नशक्ति परमे
॥ श्वरा चि ॥ महाकार एतनु ॥ ऐसी याप्रहृति पुरुष वापापुष्टुनि इर्ष्वै
॥ छोजो होलै महातत्त्व जन्म ले ॥ या प्रहृति पुरुष वापासुनि शृष्टि इद्युजं
॥ हजी तें महातत्त्व ॥ शब्दिं कायं बालि जे यदीर्थि उत्तर ॥ महामाया जाकौ
॥ तजे अधिष्ठान पूर्ण ब्रह्म चैतन्य तें सगुण ब्रह्म ॥ ज्ञासु राब्रह्मीं
॥ मीं सर्वज्ञ सर्वश्वर सर्वति इया मि ॥ यथा पुर्वक समस्त छोको तें शजि
॥ ऐसी महादुक्ता रउपज लिजे स्फुरि ॥ तेश्वर उ:

महत्वगुणमयिणाप्राप्यगुणश्चसुनिश्चात्मकात्मकात्मकात्मका
 ॥ संमहत्वपरमेश्वरचेकारणाशीर ॥ त्यामहत्वापासुनिश्चात्मकात्मका
 ॥ त्रिविधश्चहंकारजन्मठा ॥ त्याशकिसहत्रिविधश्चहंकारापासुनिश्चात्मका
 ॥ तत्वेजन्मठिं ॥ तमोउराद्यशक्तिपासुनिपञ्चतन्मात्रासहीतमहाभू
 ॥ तेजन्मठिं ॥ आकाशश्चायुःतेजः आपपृथ्वी ॥ हेष्वचमहाभूते ॥ शब्द
 ॥ स्पर्शरूपरसगंध ॥ हेष्वचतन्मात्रादिशय ॥ सत्त्वगुणाशानशक्तिपा
 ॥ सुनिपञ्चतन्मात्रात्रमंतःकर्णवतुष्टयजन्मठें ॥ निर्विकस्फुरणश्च
 ॥ तःकरण ॥ तेविसंकल्पविकल्पात्मकमन ॥ तेष्विनिष्यात्मकबुद्धिः
 ॥ अनुसंधानात्मकनितश्चहंकराव्यात्मकश्चहंकार ॥ ऐसेहेसत्व
 ॥ गुणाशानशक्तिपासुनिश्चतःकरणपञ्चकजाहें ॥ रजोगुणक्रि
 ॥ याशक्तिपासुनिपञ्चददात्मत्वेजन्मठी ॥ ओन्नत्वचाचक्षजिहा
 ॥ ध्राण ॥ हेष्वानेद्रियपञ्चक ॥ वाचापाणीपादसिष्ठगुह ॥ हेष्व
 ॥ मेद्रियपञ्चक ॥ व्यानुदीनप्राणश्रपानहेप्राणपञ्चक ॥ ईशि
 ॥ शक्तिसुहत्रिविधश्चहंकारापासुनिपञ्चविवशतितत्वेजन्म
 ॥ ठी ॥ तेष्वचविंशतितत्वेजन्मठी ॥ गहेकाशपासुनिजन्मठी ॥
 ॥ तेष्वचतन्मात्रात्रपञ्चक ॥ तेष्वचतन्मात्रात्रपञ्चक ॥ गहेकाशपासुनिजन्मठी ॥
 ॥ त्यायेकारकाशन्मात्रात्रपञ्चक ॥ तेष्वचतन्मात्रात्रपञ्चक ॥ गहेकाशपासुनिजन्मठी ॥
 ॥ तेष्वचतन्मात्रात्रपञ्चक ॥ तेष्वचतन्मात्रात्रपञ्चक ॥ गहेकाशपासुनिजन्मठी ॥
 ॥ वावयासिष्ठगुपजा ॥ तेष्वचतन्मात्रात्रपञ्चक ॥ गहेकाशपासुनिजन्मठी ॥

आकाश वायु ॥		तेज ॥		आप ॥ पृथ्वी ॥	
आकाश	श्रतःकरण	मन	बुद्धि	चित्तः	श्रहंकार
वायु	व्यान	समान	उदान	प्राण	श्रपान
तेज	श्रोत्र	त्वच	वक्षु	जिहा	ध्राण
श्राप	वस्त्रा	पाणी	पाद ॥	सिष्ठ	गुह
पृथ्वी	शब्द	स्पर्श	रूप	रस	गेध

॥ एवंविषयस्तपभूतांसि ॥ चारिस्यारितत्वेष्विनिलीयेकायेकासि
 ॥ पञ्चविसावीपाचैसींजालीपञ्चतल्लाभूते ॥ ॥ ॥ पञ्चविशय
 ॥ पञ्चमूते ॥ तेष्वामसश्रहंकारजनिते ॥ त्वेष्वानितत्वेष्वामस्ते ॥ पि
 ॥ न लिंतेथेष्विंचि ॥ ॥ होतिंश्रतिसुह्येंश्रवते ॥ डेष्वचमहाभूते ॥

॥ तें पावरी स्यद्दृशतें ॥ परस्परानुभेक्षें ॥ ३ ॥ एवं परस्परानुरा
 ॥ प्रवेश ॥ तेथें पञ्चतत्त्वास पञ्चधास हवास ॥ हाईखरईद्धा
 ॥ मायाविकाश ॥ विस्तार जाहला ॥ ४ ॥ तामसत्रहेकारापा
 ॥ सुनि स्थूलमुतें जन्मलीं ॥ लण्ठोनि सकलतेवं तेथें चिभि
 ॥ काढीं ॥ एवं कर्दीमजाहला ॥ तोरसतन्मात्रें कालवला ॥ तो
 ॥ ईश्वरते जें रोषला ॥ न्याचाद्विभाग केलो ॥ त्यात स्थूलभ्रागा
 ॥ चें ब्रत्यांउः सूक्ष्मभाग चारी हरंण्यगम्भी ॥ पुर्वीनिरोपिलीं
 ॥ त्रिविधश्चहेकारापा सुनि जन्मलीं जेपंचविंशतितत्वें चिसम्
 ॥ स्तेमिक्कोनि ॥ अपेचित्पत्पचमहामुतात्मकदेवतामयहि
 ॥ रंण्यगम्भीलिंगदेह सर्वश्वरोचें बोलिजे ॥ जें तत्वें पञ्चविसते
 ॥ हिरण्यगम्भीचिंशा ॥ हें लिंगदारीर सामास ऐकदेवाचीं ॥ ५ ॥



अतकर्ण	व्यान	श्रोत्रविवाचाज	शाद्व
विष्णु	दा	ग्ना	ग्ना
मनचड	समान	त्वन	त्वन
मा०			
बहिर्ब्रह्मदान			
स्त्र			
चित्तना	प्राण		
रायण			
अहंका	अमान	घ्र	
रुद्र	हे		
अतकर्ण	प्राणप	ज्ञानाङ्क	विशय
पचक५	चक५	यप५	पव५

॥ औसीयाप्रकारें आपंचौये वंसुद्भुतां चें दक्षं वाडे ॥ ली
 ॥ गदेह इश्वरा चें पुडे ॥ तथापि विषय सुखना दुडे ॥ स्मुद
 ॥ देहें वीण ॥ १ ॥ त्यास्तूछ देहाचें निर्मीण नाहीं पंचीहृतम्
 ॥ तेवीण ॥ मृणैष निभुताचें पंचीकरी ॥ देवें जरं भीते
 ॥ २ ॥ पूर्वीनीरोपीलेतामसबंह कारापासोनी ॥ ऐचतं
 ॥ न्यात्रारूपे ॥ जरीस्त्वयें अव्यक्तं अपंचीहृते पंचम
 ॥ हामुदें त्यापासो निस्तूछ पंचीहृते माठामुतें जन्म
 ॥ लीत्यापंचीहृतमाहां भुतां पासुनीसमस्तजगजन्म
 ॥ त्वें ॥ मृणीजेसर्वेश्वराचे विरारस्तूछ देह जाहाले ॥ य
 ॥ नंतरे पंचीकरी प्रकार मृणीजे सा ॥ येकेकमुतां

। चधाकीजे पांचा गई मेव विजे ॥ तेपंची कर्णि बोल्हि जेवे
॥ दांवशास्त्रीं पंची कर्णि प्रकार तो कै सा निरोपी जेत्ठ ॥ छ ॥ छ ॥

आकाश	वायु	तेज	आप	पृथ्वी	
आकाश	अंतःकर्ण	मन	बुधी	चीकू	अहंकार
वायु	व्यान	समान	उदान	प्राण	आपान
तेज	ओत्र	तचा	चक्षु	जीक्षा	घ्राण
आप	वाचा	पाणी	पाद	सीस्थ	गुद
पृथ्वी	रोब्द	स्पर्शी	स्त्रप	रस	गंध

॥ ऐसीया प्रकारे अंतर्माला तत्त्वं प्राणमुत्तां चं पंची कर्णि के त्या
॥ नंतर स्फूर्ति पंचाहत - नंत्रं क्षम्य हें समस्तमीत्वे
॥ नीपरमेश्वरा संविर
॥ ष्यगर्भमहत्वमूढ
॥ ईश्वरतनुनदुर्दय ॥ में
॥ ज्ञेस्यूत्तित्रीमाटांमार
॥ सवैनेत्रादिलहाणः ॥ त्रीभावस्त्रीपरमात्माजा
॥ भ्रीमानीमाटांमाया सवैसामीणीपरमात्माहेतीहीमीठो
॥ नीप्रणवाचीबधीमात्रामव्यापक स्थानब्रह्मानंदावभास ॥
॥ ज्ञागमुधसत्वगुणज्ञानशक्तिवर्णवेदपरावाचाहे
॥ समस्तमीठोनक्षेंकाराधीमात्रा ॥ याचाबंषसमस्तजी
॥ वांचीभात्मज्ञानमाटांकारणवारिरें ॥ जैसेंमुख्यदिपा
॥ पासुनिअनेक दिपजाहे ॥ तेमुख्यदिपाचीऐसे ॥ ऐकंमा
॥ हांकारणदेहपरमात्मानोहे ॥ परमात्मापूर्णित्रंभूखप्रका
॥ शास्त्रस्पुरण ॥ माटांमायानाममाटांकारणसास्त्रिसंवस्त्र
॥ तत्पदकारणदेहश्च इईछातेमाहतत्वकारणदेहसवैश्व
॥ राचें ॥ माटांप्रलयलह्यणसुषुप्तीबवस्थायादोहिचाबभी
॥ मानियद्र ॥ माटांतत्वप्रवृथ्यसुद्रहेतीहीमीठोनमकारमात्रुका
॥ जगतिछदाकैत्त्वाससंस्थानप्रवृयानंदक्षोगतमोगुणद्र
॥ व्यवक्तिसामवेदपस्यंतीवाचाहेसमस्तमीठोनीप्रणव

॥ वाचीत्रीतीयमात्रामकार ॥ ऐवं महुत्त्वदेहयाचांषसम
 ॥ स्लिङिवांचिभाज्ञानकारणश्च रिरेजैसें गेसुण्ठिं भकाष्ट्वा
 ॥ मिमाजिपउतां ज्ञानेक लिउक्याउरति ॥ तेसीश्रीष्टैइछा
 ॥ चैतन्यबधिएतां ज्ञानेक ज्ञानश्च किउठतितेविज्ञानेक
 ॥ जिवांचौकारणश्च रिरेशेवं महुत्त्वपरमात्मानोहे ॥ परमात्माश्च
 ॥ दूषनिबिउस्वप्रकाशज्ञानघनतत्यदहिरप्यगम्भी ॥ पूर्वीनिर
 ॥ पीलीज्ञेत्रिविधबहुकारापासुनिजन्मलिजेपचविंष्टीतत्वे
 ॥ तेचीसमस्तेतत्वें भिघोनिजपंचीहतपंचमाहांमुतांचेदेवला
 ॥ मयहिरप्यगम्भीसेवैश्वराचेसुस्मश्च रिरतेयेस्थीनिलसण
 ॥ स्वप्रावस्थायादोहिंचाबाज्ञीमानि विष्णुहिरप्यगम्भीस्थीति
 ॥ विष्णुहेतिक्ष्मिघोनतकारमात्रांत्रीदूषपञ्चदवेकुरस्थानप्र
 ॥ विक्षमोगसत्वगुणइष्टाश्च कियज्ञुवेदमध्यमावाचाहेसमसि
 ॥ लोनप्रणवाचीहितीथमात्रान्मारा ॥ याचांषसमस्लिङिवा
 ॥ निसामासहिंगज्ञानि
 ॥ साक्षीनिरात्मविनि
 ॥ त्यदविग्राहेहुहु ॥ पु
 ॥ मुतांचेपंचीकरणके
 ॥ तें ज्ञानित्यांचेकार्य
 ॥ वेव ॥ सहितब्रह्मादस्युद्धदेहुसवैश्वराचे ॥ मस्तकस
 ॥ त्येत्तोक ॥ तपोलोकललाहुजनोलोकवदन्महुल्लो
 ॥ ककंठ ॥ जोतिल्लोकवस्थस्थव ॥ मुवत्त्वैकहृदय ॥ मु
 ॥ लोकनामिः ॥ महिमंडवक डि ॥ सत्यसागरउदर ॥
 ॥ वउवानवजडर ॥ उपवस्थगुल्मलतारोमावलिग
 ॥ गोदिसरितानाडिन्चक्रे ॥ ईद्रलोकहुस्तदिक्पंयक
 ॥ णीसुर्यलोकनेत्रभृषीनिलोकम्भाणपुत्रकवत्रम्भ
 ॥ हुदांव ॥ येमदाह्व ॥ वसणलोकजिक्षा ॥ प्रजापतिलो
 ॥ कसीष्ट ॥ जव्ववृष्टिरेत ॥ निरयलोकगुद ॥ अतवज्ञा
 ॥ णीवितव्वहेतस्युगुव्व ॥ सुतवजानुयुगुव्वपेत्य
 ॥ तवातव्व ॥ घोंरिंमाहांतव्वप्रपद्यरसातव्व ॥ पादत
 ॥ वपातव्व ॥ तेयेवामनराहात्तो ॥ ऐवंचारवाणिचारख
 ॥ णिहिवज्ञन्तुचोज्याहेसीत्वस्योनितेणंसिंसहब्रह्मांउ

॥ स्थूङ्कदेह सर्वश्चरने ॥ तेऽप्येष्टि रचना उद्धाण ॥ जाग्रदवस्था ॥
 ॥ यादो हिचाभिमानिब्रत्नं ॥ ब्रत्नं उष्टि रचना उद्धाण ॥ जाय
 ॥ दवस्था ॥ यादो हिचाभिमानिब्रत्नं ॥ ब्रत्नम् लां स्थूङ्कदेह उष्टि र
 ॥ स्वनाविरचिहेति नीभक्तेन अकारमात्रा ॥ गाई क्षी द्वया ॥ सत्यठे
 ॥ कस्थाना स्थूङ्कमोगरजो उण क्रियादाक्ति ॥ रुद्रवद्वे रवरीवाचा ॥
 ॥ तेसमस्तमिक्तेन प्रणवात्तिप्रथम अकारमात्रा ॥ याचात्र इसमस्त
 ॥ जीवं विस्थूङ्कशीररें ॥ जैसे मृत्युमें यामेज्यात अनेकरेण ॥ तेसीं
 ॥ ब्रत्नं उत्तर्गतजिवाची अनेकस्थूङ्कशीररें ॥ एवं ब्रत्नाऽदेह परमा
 ॥ तानेऽडे ॥ परमात्मा स्वप्रकाशद्वौ पूर्ण ब्रत्न ॥ एवं तस्मदेह च तुष्ट
 ॥ परमात्मा स्वयं जोति ॥ निराकार ॥ ऐसी याद उपर्युक्त अनाममूल
 ॥ ब्रत्नं उत्तर्गतजिवाची अनेकस्थूङ्कशीररें ॥ एवं ब्रत्नाऽदेह परमा
 ॥ छयत्मणी जेब्रत्नदेवा चिनिद्वात्यानिर्देत्वोक्त्रयात्मासंक्षार ॥
 ॥ यानावदिनप्रक्षय ॥ महा प्रक्षयत्मणी जेसा ॥ ब्रत्नाऽदिकांस
 ॥ हितन्तु दशमुक्तेन सीः आणितन्मात्रमाहामूर्तेसीं ब्रत्नाऽदिका
 ॥ उपसंक्षार ॥ यानावदमहा प्रक्षय ॥ एवं निरापिलें जेब्रत्नाऽदि
 ॥ त्याब्रत्नाऽदिकांसमाप्तिनेकसां ॥ ब्रत्नाऽदिसद्वद्वायुणें वधी
 ॥ कञ्चावरणपृथक्तेच ॥ पृथक्तेच

गुणें वधिकञ्चावरण-आ

॥ वण उत्तिजाचे ॥ तेजासी
 ॥ गयुस द्वजागुण आधीक
 ॥ आधीक आवणीतामस अ
 ॥ गुणें आधीक आवणी ह
 ॥ कञ्चावणीत्यधिष्ठित

॥ मुक्तमायेने ॥ तेमुक्तमाया ॥ नकारत्वं नुजु सर्ववत्तरेव
 ॥ सत्यावणीब्रह्माऽदहश्य आनात्मा आत्मानोह ॥ एवं विरागहिन
 ॥ व्यगमीमहत्वमुक्तमायादेहेन तुष्टय ॥ एष्टि शिलीप्रक्षय
 ॥ सर्वसाक्षीणिहेआवस्थान्तुष्टय ॥ ब्रह्मा विष्टुपैरमात्माहेज
 ॥ भिमानिचतुष्टय ॥ सत्यलोकवेकुरुठकेत्वासव्यापकहेस्थान
 ॥ चतुष्टय ॥ रजसत्यतमषुधसत्यहेगुणचतुष्टय ॥ क्रियाईषा
 ॥ द्रव्यज्ञानहेत्वाकिन्तुष्टय ॥ एवं अकारठकारमकार ॥ अंका
 ॥ रब्धमात्रायापादचतुष्टें सीनिरोपित्वाजोप्रणवस्थपकारण
 ॥ पाधिसंगष्टिप्रपञ्चतोहश्य आत्माअनात्मामृणिजेअमनो
 ॥ हें ॥ जात्माप्रणवं तितप्रणवबधिशानचिराकावापूर्णब्रह्म
 ॥ एष्टप्रकावास्वयं जोतिदस्त्राचिन्मात्रब्रह्म ॥ आधा ॥ आधा ॥
 ॥ आत्मात्वं पदमाहाकारणदेह ॥ मिरवैरितप्रकावामयज्ञानम
 ॥ यज्ञानं दमयुगुण तितनिर्गुणनिराकारनिविकल्पनिराद्वनिरा
 ॥ मासा ॥ निरालंबनिविकारपूर्णब्रह्मचिराकावास्वसंव्यव्य
 ॥ प्रकावाचिन्मात्रस्वतपञ्चहेत्वामीमीतेब्रह्मचिराहें ॥ ऐसे
 ॥ सोहं मस्मीयागुरवाक्येकरनजालेंजेजानत्वेआमज्ञानिजि

॥ जिवात्मयाचेमाणंकारणदेह ॥ तुर्यीवस्थामृणिजेभर्त्साद्विज
 ॥ उत्कास्तवहृश्यत्वास्तव ॥ याज्ञरित्रयेंसिभतित ॥ आध्यमस्त्रं
 ॥ तरहिनत्वास्तवमिपुर्णब्रमृपरमात्मादेहेत्रयविलक्षणसा
 ॥ सूज्ञानातित्वचिमात्रसपेत्सेवापापणियातेंद्रुञ्जणे ॥ या
 ॥ नामतुर्यीबावस्था ॥ येवंसपानसंधान ॥ त्वस्थणमाणंकारणदे
 ॥ हतुर्यीवस्थायादोहिचाबजिमानिजेचेत्तन्यथानामप्रत्यगात्माज
 ॥ अमानि ॥ मृणिजेमिब्रमृ ॥ माणंकारणतुर्यीप्रत्यगात्मामिकेनि
 ॥ कंकाराधीमोत्रा ॥ ब्रमृरडस्थन ॥ स्वसपानदमोगमुधसत्वगुणज्ञा
 ॥ न ॥ राकिंजयवैष्णवेदपरावाचाहेसमस्तमिलेनि ॥ प्रववाचिध्वनि
 ॥ रुपन्तुर्येमात्राएवंठाकारणपरमात्मानोहे ॥ अत्मामाणंकारण
 ॥ तितसाद्विस्थप्रकाशस्थलयःदाचिमात्रस्वस्तपहृष्टा ॥ एवंमाणंका
 ॥ रणदेहुनिरसनं ॥ त्वंपदकारणदेहस्वस्वरूपचिजेविस्मृतितें
 ॥ जिवात्मयाचेकारणशरीर ॥ सुरुतिभवस्थामृणिजेसमस्त
 ॥ जाग्रतिस्वप्नजेसौवर्त्तविजिंसुधगुहडावफव्यायेसिवर्द्ध
 ॥ ज्ञा ॥ तेसास्थुलस्थमारात्रपच्छाचाबंतःकर्णेसिंकारण
 ॥ आज्ञानिदेवव्यव्याप्त ॥ यान
 ॥ मानिजेचेत्तन्यत्याना
 ॥ नामसुमुखिवस्था
 ॥ प्रज्ञाकारणसुमुत्पत्ति ॥
 ॥ यस्थाननिद्रानदमोग ॥ त
 ॥ वाचाहेसमस्तमिल्ला
 ॥ रणदेहुआत्मानोहु ॥ आत्मास्वप्रकाशाचिद्गनपूर्णब्रमृआज्ञा
 ॥ नकारणसाद्विस्वयंजोतिभसंगनिरावर्ण ॥ एवंआज्ञानकारण
 ॥ निरसनं ॥ तिंगदेहु ॥

आकाश	वायु	त्वेज	आप	पृथ्वि
अंतःकर्णे	मन	बुधि	चित्त	अङ्गकार
व्यान	समान	उदान	प्राण	अपान
ओत्र	त्वचा	चम्पु	जिहा	द्वाण
वाचा	पाणि	पाद	सीषा	गुद
शब्द	स्पर्शी	स्प	रस	गंध

॥ एवंअपं चिह्नतपंचविसकवांचेवांसनामयतिंगदेहु
 ॥ जिवात्मयाचें ॥ स्वप्नावस्था ॥ मृणिजेमनबुधिआदिकरनि ॥
 ॥ चक्षुरादिकईद्वियेंजेतेंजाग्रतअवस्थेपासोनभंतःकर्णेसीं

॥ अज्ञानकारिणितपसंक्षं रातें पावलि ऐसीये गई जाग्रत संस्का
 ॥ रवासनाजनित ॥ शाद्वादि विषयां चाजामा विवासनामय ॥ ३
 ॥ द्वादि विषयां चाजो प्रत्यय ॥ मृणिजे मनो कल्पो तजो विषयां च
 ॥ अनुभव ॥ त्याना मस्वप्रबो दिल्जे एवं लिंगदे ठस्वप्रावस्थायां
 ॥ दोहिन्दें जो अभिभानि चेतन्य त्याना में तेजस ॥ ठीगे दे ठस्वप्रा
 ॥ वस्थानैजस आभिभानि चेतन्य त्याना में तेजस ॥ ठीगे दे ठस्वप्रा
 ॥ मात्रात्र कार ॥ कंठस्थानः प्रविविक्तमोगः ॥ सत्त्वगुण ईशावानी
 ॥ यजुर्वेद मध्यमावाचो हेसमस्तमित्वेन ठकार मात्रा ऐसेहें
 ॥ हृस्य जानात्मभूत सामास सुखमवासनामय लिंगदे ठाङ्ग
 ॥ वात्मयानें जाध्यात्मश्रोतव्य मंतव्य दिक्क्रिया ज्ञादि भुल
 ॥ ठिरप्प्यगर्जे ये यिचें जादि देवत ईद्रिये सेवे स्वराचिते ज्ञा
 ॥ दिदेवते देविं द्रियां चै हिजाणा विविवंचनाते यिचिज्ञा
 ॥ दिभुलां सठिन



अध्यात्म	अधिभूत आहे	स	अधिभूत	अद्वैत
अंतःकर्णे	निविकल्प स्फुरण		मंतव्य	चंद्रमा
बुधि	त्रौधव्य		चतुर्थ	नाशयेण
अहंकार	अहंकर्तव्य	८.	त्रौतव्य	दिव्या
त्वंगेंद्रिय	स्पृश्येंद्रिय		शिरिय	स्त्रैंद्रिय रस्त्रैंद्रिय
रसमेंद्रिय	रसईतव्य	वारुण	आतैतव्य	जप्तिनोदेव
वृगेंद्रिय	वक्तव्य	जाग्री	पाणिंद्रिय	एहितव्य
पादिंद्रिय	गंतव्य	त्रैविक्रम	सिंश्रेंद्रिय	अनुरूपैत
पातुरिंद्रिय	त्रिसंग्रीत	नेत्रद्वय	जाज्ञान	विकार
जाउत्वा	स्तुकविषा	पाणसि	अध्यात्म	दिक्कविज्ञा
				नाडि

॥ शाद्वादि विषय पंचकासीजय कार्यभोग्य ऐसें बोली जे ॥ अंतः
 ॥ कर्णपंचकासीज्ञाता कर्ता भोक्ता ऐसें बोली जे ॥ त्रोत्रादिद्वा
 ॥ धाईंद्रिय प्राणपंचकासीज्ञानकारणमोग साधन ऐसें बोली जे ॥
 ॥ ऐसी हेत्रिपुटि ऐसी ॥ यात्रिगुण त्रिपुटि रूपे करनि निरोपीले
 ॥ जें पंचविंदू तिकाळा तमक सुखमवासनामय लिंगदे ठजीवात्मया
 ॥ चौं ॥ तैसामास सदृश्य अनात्माजनात्मात्मणि जे अनात्मा नेटे ॥
 ॥ आत्माएतदिव्यक्षण दृष्टि निरालबनि राजासनीविकल्प
 ॥ निष्पंचनिष्कर्णकनिशाद्विदाकाश ॥ स्वसंव्ययस्य पंजोति

॥ स्वयं प्रकाश पूर्ण ब्रह्म सञ्चिदात्म एव लिङ्गोद्धत्रात्मानो हे ॥०
 ॥ त्रात्म लिंगाति तलीं गसाई ॥ निर्विकार स्वयं जाति भसंग ॥० पुरुषं
 ॥ लिङ्गोद्धत्रात्मनि रसनं ॥ त्रात्मां असो हा निर्द्वारा ॥ सागीत उगी लिंग
 ॥ चाकिवार ॥ यानं तरें स्थूल देह विकर निरोपितौ ल ॥५ ॥ ॥
 ॥ स्थूल देह पंचिकरण ॥

आकाश	वायु	तेज	आप	पृथ्वी	५
आकाश	भय	काम	क्रोध	लोम	मोह
वायु	अकुर्वन्	प्रसारन्	चक्षण	धावण	निरोधन
तेज	निदा	मैशुन	क्षुधा	वृशा	आलस्य
आप	पूर्व	श्लेषा	रक्त	मुत्र	मेद
पृथ्वी	रोम	नाडी	उत्ता	प्रसास	अस्ति

॥ एवं पवीहत पञ्चम हौं मूर्तां ॥
 ॥ रजीवात्मय नैं ॥ जागृत
 ॥ न्वि ॥ उपत्त ध्वीमास प्रात
 ॥ त्रत्व न्वा च स्तु जिव्यु द्वापाण
 ॥ दशीष्ट गुद हें पांच क्रू ॥ ॥

विविसाज्ञे शाचें स्थूल द्वारा
 ॥ इं द्विय द्वारा स्थूल विषयो
 ॥ वण ॥ युद धित्र तर ॥ श्रो
 ॥ न ई द्विजे ॥ वाचा पाणि पा
 ॥ तः कर्णै मनहु धि चित ब
 ॥ ऊं कार हें पांच अंतः कर्ण च दुष्या ॥ ऐसी यो ई द्विये यं करो निआ
 ॥ ध्य मृणि जे ॥ चाद्व स्पष्टे रूपरस गंधा ॥ हें पांच ज्ञान ई द्वियो च विष
 ॥ षय व च तादान गमन विसर्ग गौनं द हें पाच कर्म ई द्वियां च विष
 ॥ य ॥ निर्विकल्प संकल्प निष्ठे य अनुसंधान अठं कर्तव्य हें अ
 ॥ तः कर्णी च विषय ॥ या स्थूल विषयां चिमनः च स्तुव्या धि ई द्वि
 ॥ यद्वारा उपत्त द्विमृणि जे ज्ञान स्व विषयां चांगि कार ॥ याना
 ॥ मजाग्रत अकस्त्रया दोहिं चें डें अ किमा निचैत न्यत्याना मविश्व
 ॥ हेति हिमौ को न प्रणवा चिक्का र मात्रा भने तर स्थूल जो गर
 ॥ जो गुण क्रिया शक्ति र ग्रवेद वै वरिवा च हेस मस्त मिलो न प्रण
 ॥ वा चिप्रथ म अकार मात्रा ॥ ऐसिया मिह र य अनात्म भुत दे लासि
 ॥ चाड विकार र ते कोण ते ॥ प्रथ म अस्ति ते जो ऐसै मृणि जे जं म अ
 ॥ किव धि जाय ते ॥ परिण म ते मृणि जे ताज प्य ॥ आप पक्षि ये ते
 ॥ मृणि जे वा धि क्वि न र य निमृणि ज मरण हुए वं ऐसे वाजी वि
 ॥ कार जे स्थूल या सीच तुत्य चाड धातु चार को मृणि ज ॥ पि
 ॥ त्रोस्तु नाति मद्वा स्ति र क मांस त्व चोपि च उभयो विरका भ्यां स्थू

(14)

२८

॥ छदेहस्य संभवा ॥ १ ॥ शाडधातु बणि जे पीत्याच्या तीन धातु ॥
 ॥ अस्ति नादिं मज्या ॥ मातैच्या तीन धातु ॥ रक्तमासत्कच्चा ॥ एवं
 ॥ षडधातु च शाटको मीक ऐसे रक्ष्य इरया सिद्धो निश्चल
 ॥ य ॥ ये कनि द्वाप्रक्षय ॥ दुजामरण माहा प्रक्षय ॥ ऐसे हैं रक्ष्य
 ॥ गदेह अनात्मा आत्मा नाल्ह ॥ है जैसे दाव्य जें काल ॥ त्याहुनी ये
 ॥ उक्षण दाह क पका द्वाक्षन्नी ॥ तैसा है हृष्टा देह डुनि
 ॥ विलश्युण साक्षी निर्विका रगग नोपपमका पकवाप्यभाव
 ॥ रहित देव द्राका व्यवस्था परिद्धेह ॥ शुन्यभूद्वया तित ॥ स्वा
 ॥ नमान रहित सर्वाधिकान सर्वात्मा सर्वहृष्टा सत्त्विदान द
 ॥ घन ॥ पुण्ड्रिल्ल निश्चव्यविद्वाका द्रास्त्रयं जोति स्वयं प्रकाश
 ॥ द्विष्टि स्वरूप त्रात्मा ॥ ४ ॥ ४ ४ ४

"जीवेश्वर चैर्कुपज्ञिपदनिश्चव्यस्वरूप"

"पूर्णयोः ॥

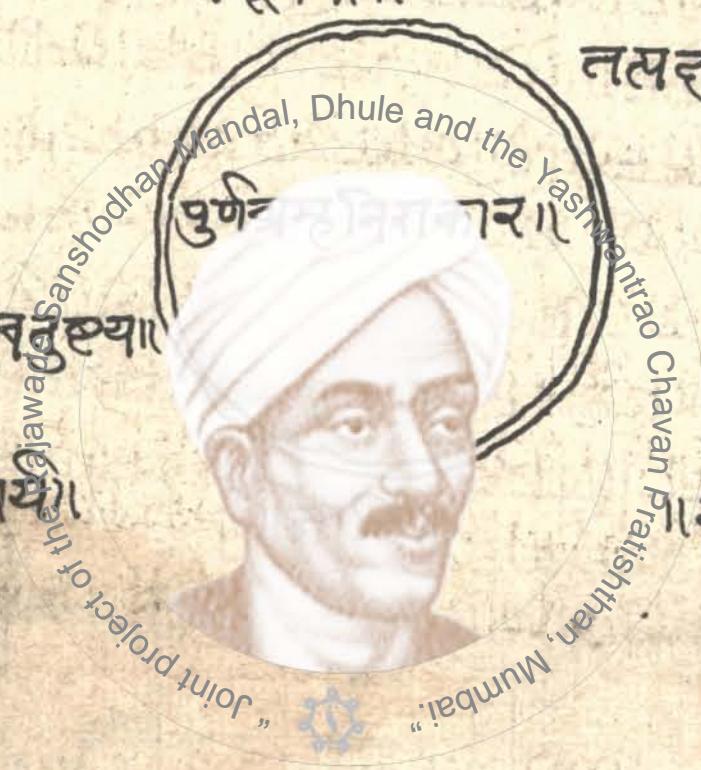
(14A)

तत्तदैश्वरदेहतुल्य ॥

॥ त्वं पदजिवदेहतुल्य ॥

"काम्य ॥

॥ कारण ॥



Pujan
७२ ॥



बहुस्फुटिसुव्यमाया
नानि कारणदेह
ईश्वराचेसर्वसाहि
अवस्थापरमा
लाज्जिमानीयत्र
यं अर्धमात्रवि
क्य

॥ कारण ॥

(4B)

॥ अज्ञानमातृं कारण
 ॥ निवाचेदेहत्रय ॥
 ॥ साहित्यलक्षणतुर्या
 ॥ वस्था प्रस्तुगात्माजिनि
 ॥ मानिब्रह्मरंधरस्थान
 ॥ स्वरूपञ्जनं हावंभा
 ॥ समोगसुधसत्त्व

प्रणवार्ध

॥ काय

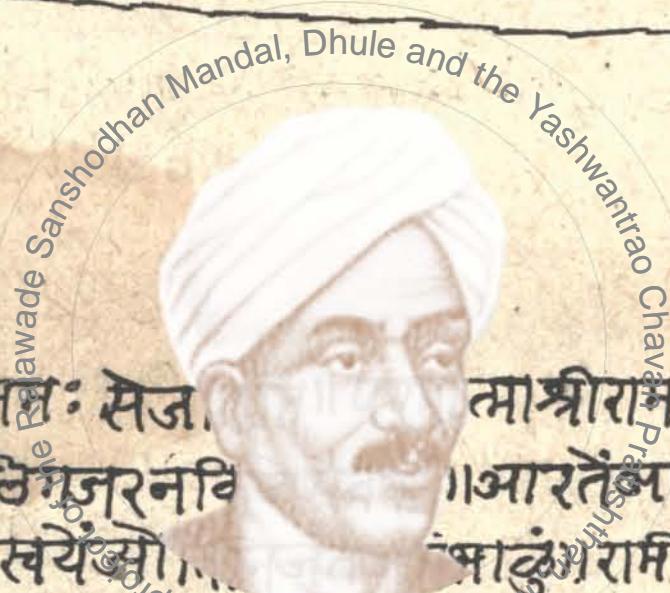
(14C)

(15)

॥ केत्यमकारस्मादक्य ॥

॥ जुतांच्यापंचविस ॥ देवतामयबपंचिह्नतपंचविसा
 ॥ कल्यानेऽलिंग वाल नैश्चित्राविस्त्रोतिजा
 ॥ यंचस्वप्नावस्थातेजसञ्जिमा वस्थाविष्ट त्रयत्कार
 ॥ नि येत्कारमात्रा ॥ मात्रा ॥ हिरण्यगमैयाचेंका
 ॥ सुद्धमा ॥ देवता

काय कारण
 पंचिह्नतपंचमाणंजुतांच्या ॥ विग्रहदेह-
 पंचविशान्विस्त्रवदेहुदिवाचेंजा यत्रयज्ञाकारमात्रा
 यतिजावस्थाविश्वज्ञानिमानि ॥ वैराजयोरेक्यं
 यत्रयकारणमात्रा ॥ स्तुवा ॥



॥ श्रीगणेशायनसः सेज ॥
 ॥ विश्रांतिपावचिग्नजरनवि ॥
 ॥ छु ॥ प्रकाशलिख्ययेंडो ॥
 ॥ आरति ॥ पाहतांकोटिजनेंबनेहृद्यानासती ॥ २ ॥ माजनानाश्रेह
 ॥ वातिपावक ॥ सबाद्येअभ्यातरिंजवधानीघोटदिपक ॥ १ ॥ ऐक्याचि
 ॥ येसजेसुतवात्मारद्युपती ॥ याचापात्रदालाशाह्नबोल्डेपुढ
 ॥ ति ॥ रामदासदेनिपौटलेरामी ॥ हेंडिबोलावयादुजेंनुरेधामी ॥ २

ताश्रीराममहामायज्ञानकी ॥
 ॥ आरतेंमारतियेकेमोवेंडोदो ॥
 ॥ भाद्रं ॥ रामीरामदासींसहजीं

॥ अगानिवेदात्मत्वारीमिमांकसान्यायपवच ॥ पुराणंधर्मशास्त्रं
 ॥ चविद्यात्मताश्वहुदेशं ॥ षड्गोगभवेद्रा ॥ मिंमांस ॥ न्याय पुराण धर्मशास्त्र
 ॥ सीधीकल्पव्याकर्णंनिरतंज्ञौतिषागति ॥ विजितेरितिरितेषु ॥
 ॥ षड्डंगोवेद्दुच्यते ॥ १ ॥ ८ ॥ ८ ॥ ८ ॥ ८ ॥ ८ ॥
 ॥ पद ॥ शामकल्पाण ॥ ताक्तिवडांजासाजभवानिमुजलगतउरावव
 ॥ निउनबरईन ॥ बसनश्वरुखनपावेनाभयोरिआलिबिरहुंस
 ॥ तावेमोहेघनछन ॥ ८ ॥ रागिणियनकल्पाण ॥ लालन
 ॥ श्रान्तरस्तुमानिश्रायेहोमेरेग्रेह ॥ श्रालसिलेनयनवा
 ॥ नतोतरहत ॥ ८ ॥ श्रधरश्रधरपितनिकेसोहेसोहेका
 ॥ हेकुलजातआउरसोहेरवात ॥ ८ ॥

Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavas Pratishthan Museum
 www.Rajawade.org

१॥ श्रीगणेशार्हनमः॥

(16)

॥ नवाचेमासारी जौर पिठारो जारी ॥ शुन्याचिवो वरिसु निष्ठप्रसा ॥
 ॥ जीवदशामय अंगुष्ठप्रसाण ॥ त्यावरि अज्ञानपर्वधते ॥ चैतन्या
 ॥ चिसु सतयामाजौवो तिलिं अव्यक्ते वस्त्रीके वित्तेये ॥ ३ ॥ तवते
 ॥ मस्ताप्रसाण ॥ तयानावस्थां कारण ॥ गुरुमुखे रखुणजाणबापा ॥ ४ ॥
 ॥ ज्ञानदेव मृण्यापरतें जाणें ॥ नाहिं नाहिं आणनिवृत्तिचि ॥ ५ ॥ ५
 ॥ उलाचपाणुजो लग्नपाहे शुन्याचासवठ ॥ नीवदीं दुनिष्ठरवल
 ॥ रिता ॥ ६ ॥ सीवावो पातलें चैतन्यतेये ॥ जाणपानिरतेबहुमवेसी ॥ ७ ॥
 ॥ पावी तिलगिआ दिनायें दाविते ॥ ज्ञानदेवापावलेनीवृत्तीहेपे ॥ ८ ॥
 ॥ स्वरुपाचामुरगगनासरितापातलग ॥ देववणाकुडात्तदेस्वतांचि ॥ ९ ॥
 ॥ चैतन्याच्यालगहेलगवत्तियकसरा ॥ प्रलयाच्यानिरासारिरव्या
 ॥ पै ॥ १० ॥ नातरिमोतीविखुरलभंवरि ॥ इसनिपरीकरियेतिचि
 ॥ ना ॥ ११ ॥ ज्ञानदेव मृण्यो निवृत्तिविलेसारमाझेमज ॥ १२ ॥
 ॥ मोतीयाचावो गरुगुरुव
 ॥ या ॥ १३ ॥ धारणेहुलेडं
 ॥ जरा ॥ १४ ॥ चारव विता विर
 ॥ कघरो घरि ॥ १५ ॥ ज्ञानदेव
 ॥ पाई होणे विनसदा ॥ १६ ॥ टियेल्लजनिनभाची
 ॥ गोडीयेचिसुरवें जांगि
 ॥ जीयेका आहुतजांझी
 ॥ रववियेण रखुणे ॥ त्याचे
 ॥ वेळांगणिपाहित्वेआप
 ॥ ण ॥ तवतजवत्याजाणदा हिंदजा ॥ १७ ॥ ब्रह्माजायेवडेवोति
 ॥ वसगवे ॥ मनकुधिकेवछेसेनाहि ॥ १८ ॥ तेज्ञानकुंकुधिज्ञानदे
 ॥ वात्ताधत्ते ॥ निवृतीनेदिधव्यहुतिं धर्मनिं ॥ १९ ॥

अस्तिनिभरणिहृतिकापादेशाण् दृष्टिकारो हिंणिमृगिशराधृवृषभः
 मृगिशिरार्द्धजारङ्गापुनर्वस्त्रयमिथुनः ॥ पुनर्वस्त्रमुष्मज्ज्वेशात
 कर्कटकः ॥ मध्यापूर्वाउत्ररापादं सिलः ॥ उत्तराहरत्तरित्राधृकन्यः ॥
 चित्रास्त्रातिवीशारवास्त्रयोगुङ्कः ॥ विशारवाअनुराधाजेद्वातवृ
 ष्यकः ॥ मुखपुर्वाशाठाउत्रराशाठापादं धनुः ॥ उत्तराषाठाश्रव
 णधनिष्ठाधृमिकरः ॥ धनिष्ठाराततारकापूर्वाज्ञाङ्गपदास्त्रयोगु
 भः ॥ पूर्वास्त्रार्द्धपदास्त्रयोगुभः ॥ पूर्वास्त्रार्द्धपदाउत्रराज्ञाङ्गपदा
 रवत्यतेभीनः ॥ ११ ॥

(17)

कात्यायनिव्रत

जउपटव्यतिरेकमुख्येहरी॥ तदपिजन्वयदाउदेहरी॥ क
थिनेतेचिकधारससारसा॥ नमुनित्याहरिच्यापदसारसा॥ १५
लंगुगोकुङ्गोपिकासत्खवृत्ती॥ हरीवीणजेन्यत्रजालीनिवृत्ती॥
॥ १६॥ तयासीचत्सातन्मयत्वेंरमाया॥ ब्रजींपुजीतीब्रत्मीव
द्यादिमायाएजस्यादिव्यत्राध्यात्मसूपेहरीतो॥ केरोनीकधाते
श्रविद्याहरीतेस्मैमधेश्रक्तिचीस्मृत्तनात्ती॥ विनाशक्तितेज्ञानक्रोहीं
चनाहीं॥ ३॥ प्रतीचेपतिजोहंगोपहोतेहरीहेष्वतांहेतिनिःसारहो
ते॥ दिसेज्यासित्रात्मास्थयेकंसहता॥ तेयाकास्त्वेकांलस्त्वेपेत्र
हुता॥ ५॥ प ब्रत्मविद्येसीजेक्षंभजावि॥ तेऽद्वैतसंस्कारस्त्वपात्य
ज्ञावें॥ विसंबोनयेसर्वथाब्रत्यविद्या॥ तरीबोधद्विभवेनिनासेत्र
प्रविद्या॥ ६॥ अत्मताणुरमुखेस्मैजावि॥ बोधद्विभिजद्विसम
जावी॥ चित्तचिन्मत्यकरा असाविद्या॥ सेवितोसकाळेनात्ता अ
विद्या॥ ७॥ अत्माद्विद्युनिद
त्रविद्यावधूनी॥ नर
श्रीहरिसोमस्या॥ ८
बावितितापसोटी॥ न
स्वकाळजाग्नी॥ ९॥
तेकाळहोउनिहरीचहरा
त्वेवंवेदतो॥ जोयाकथारसिभ्येसेरितिभावेदतो॥ १०॥ गीतेमध्येपु
रुषतोचिसहस्रशीषी॥ मासासअत्मपराहेप्रभुमागशीषी॥
कीहाफिटेविरहभेदतयाचमासी॥ द्वैतांतद्वृत्पवद्यापुरुषो
त्तमासी॥ ११॥ श्रुतीमध्येरजतयोम्यद्विसेभजाया॥ मायेसिपू
जितिहरीतचिगोपजाया॥ कीमागशीषहेरिस्तपतयाचमासी॥
पूजोनियासरमल्यापुरुषोत्तमासी॥ १२॥ एवंहरीचीहरीरु
पमोया॥ त्यापूजि॥ तीत्याहरिसीरमाया॥ तोतंतुचिदस्त्रजडत्र
माते॥ हर्सुनिद्वैतंचिसुमध्यमाते॥ १३॥ अर्धमरीतीस्वकथाद्
दावी॥ स्मणोनितोक्ष्यंचिभावदावी॥ परंतुसाधारणमानवाच
ची॥ वाच्चिमुखेहामहिमानवाची॥ १४॥ यालागिसवसिकथाक्षा
या॥ श्रीव्यासनैख्यातकरीक्षाया॥ स्मणोनिदाउनिविवारसा
चा॥ बोलोंसुधास्वादकथारसाचा॥ १५॥ हेमंतशीतव्रतेत्र
स्थिरजंगमास॥ श्रीमागशीषपहिलाहरिस्तपमास॥ मा

अविद्याहरीतेमर्श्यामधेंभक्तिचीसूचनांतीं विनाभक्तितेजानकोहि
चनाहिं॥३॥ प्रतीचेपतिज्ञाहं गोपहोतेहरीदेरवतांहेतिनिः सारहो
तें॥ दिसेज्यास्मिन्नात्मास्थयेकंसहता॥ तेयाकांस्त्रेवेकांलेस्त्रेपंश्च
तंता॥४॥ पं ब्रह्मविद्येसीजेव्हांभजतावें॥ तेंद्वैतसंरक्षारस्त्रपात्य
जावें॥ विसंबोनयेसर्वथाब्रह्मविद्या॥ तरींबोधविवेनिनास्मेश्च
म् विद्या॥५॥ अत्मतागुस्त्रुखेवेस्त्रेवावी॥ बोधदृष्टिहिजडींसम
जावी॥ चित्तचिंमयकरीश्चिविद्या॥ सेवितोसकंठनाशश्च
विद्यांश्चासादेखुनिल्लक्ष्मावद्यानी॥ भजां यातयोतें
श्रविद्यावधूनी॥ तयाचिंनितीसेवीतीस्त्रेवमाया॥ तदैकेपंत्या
श्रीहरिसोरम्या॥ आविद्याहरीप्राप्तिसीहेतुबोटा॥ तेसेविल्लो
बाकिततापवोटे॥ नद्वैतजन्मच्छिमगकाविजाला॥ हेमंतेताम्
स्त्रेवेस्त्रेवेत्ताम् लक्ष्मकालजाला॥६॥ रामानिमित्यभजतांहरिचीसुविद्या॥
तेकाळहोउनिहरीचहरा॥७॥ मामागशीष्ठेलणुनिस्त्रिमु
रेसावद्वैतो॥८॥ गीतेमध्येषु
तमपरद्वैतभुमागशीष्ठा॥९॥ द्वैतांवद्वैतपद्यापुरुषो
यद्विसेस्त्रेजाया॥ मायेसिपू
गशीष्ठहरिस्त्रपतयाचमांसी॥१०॥
पूजोनियासरमल्लापुरुषात्मासु॥११॥ एवंहरीचीहरीस्त्र
पमोया॥ खापूजि। तीखाहरिसीरमाया॥ तोतंतुचिदस्त्रजडभ
माते॥ हस्तनिद्वैतेंचिसुमध्यमाते॥१२॥ अर्धमरीतीस्त्रकथाव
द्वावी॥ स्मणोनितोक्ष्णचिभावदावी॥ परंतुसाधारणमानवाची॥
वाच्चिमुखेवेहामहिमानवाची॥१३॥ यालागिसवसिकथाकवा
या॥ श्रीव्यासनैख्यातकरीकवाया॥ स्मणोनिहाउनिविवरसा
चा॥ बोलोंसुधास्वादकथारसाचा॥१४॥ हेमंतरीतकरत्तै
स्थिरजंगमास॥ श्रीमागशीष्ठपहिलाहरिस्त्रपमास॥ मा
सांतस्यांतफङ्कदेप्रभुशक्तिमाया॥ सोम्याविणेनगनयेऽग्नि
दिसेरमाया॥१५॥ स्मणोनिगोपीहरिसीरमाया॥ आराधिति
सर्वमिकोनिमाया॥ हेमंतकाळीप्रथमेंचिमासी॥ कीडावयाश्रीपु
रुषोत्तमासी॥१६॥४

तिच्यामंत्रातैकींवजप्तुतहोनिजपती॥८

स्यजुनिअन्नहविष्वचिभक्षिती॥ निजतिगोमयलिस्मुभक्षी
ति॥ निंमआणिकसर्वहिरक्षिती॥ फक्षपणेहव्याहरिलक्षि

ती॥ १७॥ उषःकाळीस्नानेकरित्यत्रितिश्राप्तगवती॥ नदी
तीरीजेक्षांकिरणश्रुणावेत्तगवती॥ करूनीहेवीचीसुतनु-

सिकतामूलितिपती॥ १८॥ तरींकाक्षिंस्मीच्याप्रतिहिवसमासं
दत्थरा॥ करीतीश्रीपूजास्मरेफक्षस्येगिरिधरा॥ युज्ञोतोहे

सायाफच्छपरमचिद्यपगेवसे॥ अकेकारीनाना। निजधनय
रोहेसचिवसे॥ १९॥ फक्षाच्याआक्षोनेस्मरत्तथसतोतांचि

मल्लता॥ अनायासेहस्यास्मृतिपसरखोहेशुमल्लता॥ हरी
ध्यानोगनोस्मरतियुवतीत्याससक्षा॥ वृत्ताचीहेचर्याल

एउनिचजालीअवकला॥ २०॥ सफच्छकर्मकरीहरीचीस्मृ
ती॥ हरीहरोत्थणतांहसेतस्मृती॥ तरिंतयासहिसद्यनमो

हरी॥ जरिंहसेणहरिचेमनमोहरी॥ २१॥ त्यतिमनीहरिनाम
मुखेंरी॥ नमनसद्यपेतद्यरी॥ त्यणुनिवेदनेघेउनि

याबरें॥ हरनियादेष्टवरे॥ २२॥ कर्मार्यणाचा
क्रमसांगजालीतेल

त्मरीतीहरिपापल्या
अन्यदेवतनूद्देजीरपू
समस्तनगन्तीकनकांचे

परेदुजेतेकदत्तासव
व्येस्वात्मसुधारसत्वे॥ २३॥ आध्या
सायाकरिसावद्याहो॥ २४॥

सुरसुरारिरिपूजी॥ कीं
विधिमाजनकाचो॥ २५॥

ब्रह्मादिहाहासुरराजस्माचा॥ विलोसतोराजसता
मसाचा॥ २६॥ जोसर्वस्तुपहरिआपणपूज्यजाला॥

आगोस्तुफक्षदत्तहित्याजजाला॥ झीमेजुसेचरण
भूषणहीसुवणें॥ तेशासतेकनकाश्रापुलियासुवणें॥ २७॥

परिपदीपदभान्त्रिशोभवी॥ कनकयेरितिकामुक
जेभवी॥ इतरञ्चल्पकच्छेइतराकुती॥ डीरिसिसे

श्वेतिनिधेती॥ एवंहरीइतरेदेवतकल्पकाही॥ देतोफक्षेतद
नस्तुपचित्यल्पकाही॥ तोगोपिंकाफक्षहिसानुनिदेवराय॥ २८॥

भाग्योहयेभजतितोप्रसुद्वद्याय॥ २९॥ फक्षदर्शिवभसा
करिजोपण॥ प्रभुचकेवव्यतोप्रभुआपण॥ लणुनिसत्वत
नुफक्षस्तुपणी॥ खवरदेसतिहीस्वनिस्तुपणी॥ ३०॥ कात्याय

निपूजनबायकांचे॥ तेऽप्रवर्तीश्रीन्रजनायकांचे॥ तत्रारिपत्या
चेपक्षहोस्विजाला॥ जपोनित्यामागतित्याश्रीजाला॥ ३१॥

जोमज्जनेकीरितियमुनेनरी॥ तोयेकितेकगदिधेउनिपूतनारी॥ ३२॥



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com